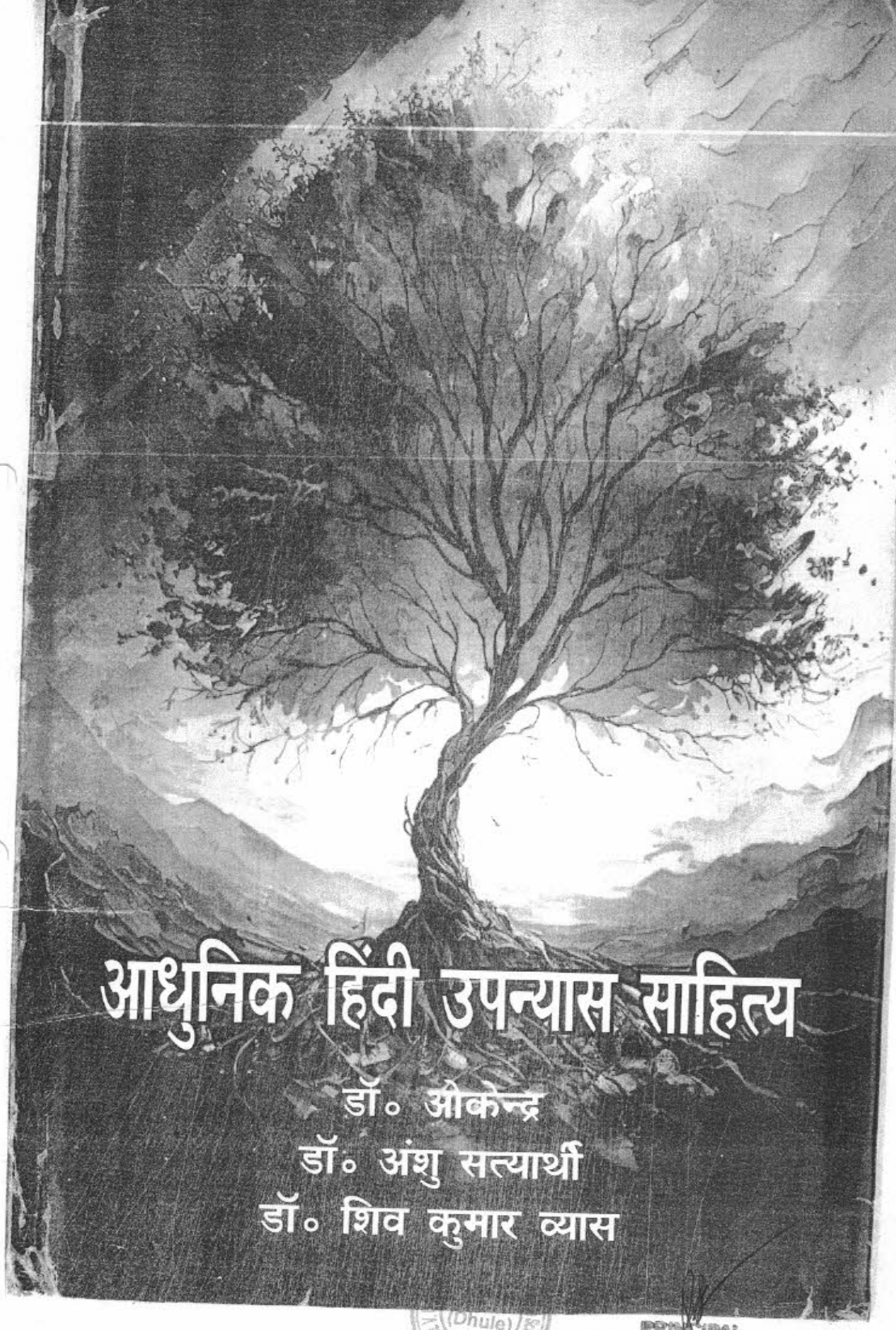

आधुनिक हिंदी उपन्यास साहित्य

डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० अंशु सत्यार्थी
डॉ० शिव कुमार व्यास

(Dhule)
PRINCIPAL

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

आधुनिक हिंदी उपन्यास साहित्य

सम्पादक
डॉ० ओकेन्द्र
डॉ० अंशु सत्यार्थी
डॉ० शिव कुमार व्यास

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२३
ISBN 978-93-5987-857-7

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
बी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ६६५ रुपये

ब्रांच ऑफिस: ए-9, नवीन इनक्लेव गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन-201102

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

Adhunik Hindi Upanyas Sahitya Edited by
Dr. Okendra, Dr. Anshu Satyarthi, Dr. Shiv Kumar Vyas

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
T.S.S's Smt. V.U. Patil Arts & Late Dr. B.S. Desale Science College
Sakri, Tal Sakri, Dist Dhule

आधुनिक हिंदी उपन्यास साहित्य

सम्पादक

डॉ० ओकेन्द्र

डॉ० अंशु सत्यार्थी

डॉ० शिव कुमार व्यास

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स

वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,

दिल्ली-110053

मो. 08527460252, 09990236819

ईमेल: jtspublications@gmail.com

Sakri (Dhule)

PRINCIPAL

V.U.Patil Arts &

Dr.B.S.Desale Science College

अनुक्रमणिका

भूमिका ५

१. हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव एवं विकास १६
उमादेवी आर.

२. हिन्दी उपन्यास सहित्य में जयशंकर प्रसाद का अवदान ३३
डॉ० प्रकाश कृष्णदेव धुमाल

३. आधुनिक उपन्यासों में नारी-चेतना ४८
डॉ० करुणा दत्तात्र अहिरे

४. उपन्यास में युगीन परम्परा का विकास ५५
डॉ० पल्लवी सिंह 'अनुमेहा'

५. भगवतीचरण वर्मा के उपन्यासों में नारी के विविध रूप ६४
डॉ० राम पाण्डेय

६. हिंदी उपन्यासों में सामाजिक चेतना का विकास ७६
डॉ० सीमा रानी

७. नासिरा शर्मा कृत 'अक्षयवट' उपन्यास में अभिव्यक्त सामाजिक समस्याएं ८६
डॉ० अर्चना पत्की

८. ममता कालिया कृत 'बेघर' उपन्यास में संघर्षरत नारी जीवन ९३
डॉ० अर्चना पत्की

९. सुषम बेदी कृत उपन्यास 'मोरचे' के संदर्भ में एक प्रवासी भारतीय स्त्री का अंतर्द्वन्द्व १०५
डॉ० अनामिका जैन

१०. ग्लोबल गाँव के देवता उपन्यास के संदर्भ में असुर जनजाति की लोक संस्कृति ११४
लक्ष्मी. एम.एस

PRINCIPAL
K.S.S's Smt. V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal Sakri, Dist Dhule

Sakri (Dhule)

३
आधुनिक उपन्यासों में नारी-चेतना

डॉ॰ करुणा दत्तात्र अहिरे

साहित्य में समाज का हित सामाहित होता है। जनहित को प्रमुखता देते हुए साहित्यकारोंने अपने साहित्य को रचा है। प्राचीनकाल मे महिला लेखिकाओं ने उनकी रचनाओं में एक साहित्यकार होने के नाते "नारी" को मानवता की दृष्टि से देखने के लिए बाध्य किया है। समकालीन महिला लेखकाये अपने अनुभव अनुभूतियों से लिखित साहित्य में "नारी समाज" को एक नया विचार–विमर्श, नयी सोच देने का काम कर रही है। समकालीन महिला उपन्यासकारों में मृदुला गर्ग का उपन्यास 'कठगुलाब' नारी चेतना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

नारी चेतना नारी समाज को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक एवं व्यक्तित्व विकास के लिए अनिवार्य है। जब तक नारी स्वयं को जागृत नही करेगी तब तक वह कभी भी स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर नही हो सकेगी। 'कठगुलाब' इस उपन्यास में नारी पात्रों में भी मुक्ति की आकांक्षा है। कठगुलाब के नारी पात्र स्मिता, स्वावलंबी होना चाहती है। इसलिए वह उचित शिक्षा प्राप्त करती है, और नौकरी भी करती है। स्मिता अपने जिजा से शोषित है, परंतु वह मन से अपने आपको मजबूत बनाकर अपने ऊपर हुऐ अत्याचार का प्रतिशोध लेने के लिए वह कानून का दरवाजा नही खटखटाती बल्कि स्वयं एक शक्ति रुप बनाने के लिए आवश्यक उर्जा को समेटती है वह सयं में रणचण्डी की कल्पनां करते हुए जीजा जैसे पापाचारियों का दमन करने का निश्चय करती है। इस

(हिंदी विभाग) श्रीमती. व्हि. यु. पाटील कला व कै. डॉ. बी. एस. देसले विज्ञान महाविद्यालय, साक्री जिला-धुले, (महाराष्ट्र)

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
T.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

प्रकार की जुगुप्सापूर्ण घटनाओं के बारे में सोचने से बचने के लिए वह अपने आप को हर समय काम में व्यस्त रखती है। ताकि सामर्थवान बनकर अपने विरोधियों से प्रतिशोध ले सके। वह अपने जीजा द्वारा किए गये घृणित कृत्य का जिक्र किसी से नही करती, जीज़ा के प्रति क्रोध को अपने अन्दर ही दबाये रखती है। अन्तर्मुखी होने के कारण स्मिता अपने किसी भी मित्र से अपनी व्यक्तिगत बाते नही बॉट पाती। लेकिन अपने जीवन को यशस्वी बनने हेतु बिकट परिस्थितियों में भी हिम्मत नही हारती, न ही निराश होकर बैढती है, अकेली रहकर वह बी. ए. प्रथम श्रेणी प्राप्त करती है, पढने के लिए अमेरिका जाती है और आर्थिक रूप से स्वतंत्र भी बनती है।

नायिका मारियान है जो अमेरिका के संपन्न एवं संवेदनशील महिला है, सौंदर्य और ऐश्वर्य की साम्राज्ञी वरजिविया की पुत्री है, किंतु मारियान का रूप में विरासत मॉ की नही पिता का मिली है। नारी सहज विश्वसनीयता, संवेदशीलता उसके आभूषण है, सौतेले पिता जार्ज से कुछ स्नेह पाती है। वह पति से संतान चाहती है बदले में पति द्वारा उसे प्रताडित किया जाता है। पति को कुछ बना देखने की नारी–सुलभ इच्छा में वह कमाकर ही नही लाती उसके लिए रिसर्च भी करती है। पति उसकी मॉ बनने की आकांक्षा का भरपूर फायदा उठाता है बौध्दिक आर्थिक स्तरपर है। निचोडना ऐसे पति के प्रति समर्पण भांव लगता है। सब कुछ होते के पश्चात भी पति का बेरहम निचोडना असे पति (इर्विग) अपने नाम से पुस्तक छपवाकर उसके पुस्तकरूपी शिशु का अपहरण करता है। तो दुसरी और उसे समझा–बुझाकर गर्भपात भी करवाता है। वह सदा के लिए मातृत्व की शक्ति खो बैढती।

कठगुलाब की पात्र 'असीमा' अलग चरित्र है। वह स्त्री शक्ति का प्रतिक है। वह कभी–भी किसी से शोषित या प्रताडित

PRINCIPAL

नही होती। वह स्मिता और अपनी मॉ के अनुभवों को देखकर अपनी आप में एक उर्जा बन जाती है और नर्मदा, नमीता और स्मिता के लिए सहायक बनती है अंतिम क्षणों तक शादी नही करती। असीमा पांरपारिक और आज की आधुनिक नारी से अलग पात्र है जो सिर्फ सहना नहीं बल्कि विरोध करना भी जानती है। अपने पिता का माँ के प्रति जो व्यवहार है, उसके कारण असीमा मर्दो से नफरत करती है, नमिता का पति जब उसे पिटता है तब नमिता के लिए असीमा अपने कराटे प्रशिक्षण का प्रयोग कर असे पीटती है।

'कठगुलाब' में असीमा की मॉ स्वाभीमानी नारी पात्र है जो अपने पति के दुसरे शादी के बाद उनके साथ न रहकर अपने बच्चो का पालन पोषण करती है। वह कभी भी अपने पति के दिए वस्तुओं की मोहताज न रही। स्वयं दर्जी का काम कर बच्चों की आवश्वकता को पूर्ण किया परंतु पति के सामने हाथ नही फैलाया। असीमा की मॉ अशिक्षित होकर भी अपने जीवन मूल्य और स्वाभीमान की प्रति सजग है।

मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी रचनाओं में नारी चेतनाओं के अंतर्गत नारीओं को अपने उत्तरदायित्व के प्रति प्रेरित किया है किशोंरियों से लेकर अधेड उम्र की महिलाओं तक अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग हो उठी है।. विवाह के प्रति वर्तमान नारी का दृष्टिकोण बदलने लगा है।. अब वह विवाह को बंधन के रूप में स्वीकार न कर असकी महता को समझने का प्रयास कर रही है। अब स्वयं स्त्री प्रेम–विवाह को अनिवार्य न मानकर गौण मान रही है। वह शिक्षा तथा युगबोध से प्रभावित होकर विवाह को जीवन का केंद्र मानने से अस्विकार कर रही है। वह विवाह के लिए आत्म निर्णायक बनने लगी है।

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL

मैत्रेयी, पुष्पाजी की रचनाओं की नारी भले ही गॉव की है, किंतु वह अपना जीवन स्वतंत्र रूप से जीना चाहती है, आधुनिक नारि आज नई संकल्पशक्ति के साथ जीने लगी है। समाज में स्वतंत्र अस्तित्व की रक्षा के लिए नारी को कदम–कदम पर विद्रोह और संघर्ष करना पड रहा है। पुरूष के भॉति वह समाज में स्वायतत्ता स्थापित करनां चाहति है अपने अधिकारों के प्रति वह सजग हो चूकि है मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी पात्र अपनी स्वतत्रंता के लिए आयाम निर्धारित करती है। वह अपनी अस्तित्व की रक्षा के लिए दृढता से समाज का सामना करने हेतु सदैव तत्पर रहती है। यही अनकी लेखनी का प्रमुख उद्देश्य है।

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास इदन्नमम की नायिका मंदाकिनी तथा चाक की नायिका सारंग इसका प्रतिनिधित्व करनेवाली स्त्रिया है।. मंदाकिनी तथा सारंग यह दो नारियो की कहानी नही है. यह हमारे पूरे समाज की दो प्रमुख धाराओं के प्रतीक है। एक और राजनेताओं के अपने पिछवाडे में, प्रतिगामिता, भ्रष्टाचार, हैवानगी और सामंती ऐठ की धारा बह रही है. जिसमे हाथ धोने से कई लाभ है किंतु वही दूसरी और गॉव के क्षुद्रतम तबकों से एक अन्य लहर भी उतनी ही ताकत के साथ उठने लगी है। उपन्यास का प्रतिशोध करके, उसे चुनैती देने और अन्याय के आगे हथियार न डालने की।

'इदन्नम' उपन्यास की नायिका मंदाकिनी केवल निजी स्तर पर ही संघर्ष नही करती बल्कि मजदूरों के हक के लिए स्त्रियों की शक्ति और बुध्दि पर भरोसा किया करती है। इसलिए बडे विश्वास के साथ श्यामली गॉव के बुजुर्ग महिला के हाथ में नेतृत्व देकर असके पीछे–पीछे चलने का विश्वास देती है। आज पुरूष मानसिकता में स्त्रियों के प्रति उदार दृष्टिकोन तथा सहयोग की भावना विकसित होते हुए हम देखते है।

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
S.S.V.P.S. Smt. V.U.Patil Arts & Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal Sakri, Dist Dhule

मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' इस उपन्यास में सारंग अपने बहन रेशम की हत्या का बदला लेना चाहती है। अपने पति का साथ चाहती है की हत्योंरो के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट लिखे लेकिन पति उसे साथ नही देता फिर भी अपनी बहन के हत्या का बदला लेने के लिए पतिका विरोध सहकर हत्यारों को सरे आम पिटती है, और इसके खिलाफ रिपोर्ट लिखवाती है। यही नीडर और हौसले वाली चाक उपन्यास की सारंग चुनाव में खडी होती है। स्त्रियों को जागृत करती है। गॉव की प्रधाननिन भी उसे सहाय्यता करती है। गॉव का प्रधान अपनी पत्नी को डॉटता है और अपनी पत्नी पर हाथ उठाता है, तभी प्रधानिन में हौसला आता है और वह अपने पति का विरोध कर सारंग की मदत करती है।

नवजागरण की प्रक्रिया में नारी शिक्षा पर जोर दिया गया। नारी शिक्षित हुई और उसने समाज में अनेक भूमिकाऐं भी निभायों। आधुनिक काल में नारि जागृत होने के कारण उसने परंपरागत, सनातन, रूढियों , संस्कारो को नकारना शुरू किया। इसी पृष्टभूमि पर मैत्रेयी पुष्पा ने 'चाक' इस उपन्यास में नायिका सारंग अपने गांव में सामाजिक राजनीतिक धार्मिक सुधारोंके लिए कटिबध्द हैं।

आधुनिक उपन्यासों मे चित्रित नारी चरित्रों मे वैयक्तिक रूचि महत्वकांक्षा स्वतंत्र चेतना अस्तित्व और आस्मिता की पहचान से कही अधिक जीवन के दुःख एव संघर्षो से परिपूर्ण है और उसके समांतर पीढियों का मोहभंग, घूटन, विघटन, वर्ग संघर्ष की समांतर चेतना एवं जीवन बोध का वर्णन किया गया है। नारी की संवेदनाओं को शायद नारी ही आच्छी तरह से समझ सकती है इसलिए महिला लेखिका (उपन्यासकारों ने) नारी की वेदनाओं और उसकी सामाजिक स्थिती का यथार्थ चित्रण किया है।

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
K.S.S's Smt. V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College

यदि हम सुधा मूर्ति के उपन्यास 'महाश्वेता' में नारी पात्र के रूप में अनुपमा का विवाह धनवान आनंद से होता है वास्तव में आनंद उसे एक नाटक मंच के दौरान अनुपमा से मिलता है और अनुपमा के सौंदर्य और गुणों से मोहित होता है डॉ. होते हुए भी निर्धन अनुपमा से विवाह करता है जिसके लिए आनंद कि माता अनिच्छा पूर्वक सहमति देति है।. आनंद विवाह के पश्चात उच्च शिक्षा के लिए इग्लंड चला जाता है। इधर अनुपमा को कुष्ठरोग हो जाता जिसके कारण आनंद का परिवार नकार देता है और अनुपमा को वापस अपने माता–पिता के पास उसके घर भेज देते है। अनुपमा के पिता गरीब अध्यापक है असके कुष्ठरोग के कारण असकी छोटी बहन का रिश्ता टुट जाता है, अनुपमा आनंद को पत्र लिखती है लेकिन सामाजिक दबाव के कारण आनंद भी अससे मुँह फेर लेता है। इससे अनुपमा बहुत दुःखी होती है असके मन में आत्महत्या के विचार आते है। लेकिन वह हिम्मत जुटाकर परिस्थितियों का सामना करने का निर्णय लेती है और अपनी एक सहेली के पास मुंबई आ जाती है। नौकरी तलाश ते हुए वह एक कॉलज में नाट्य अध्यापिका के रूप में कार्य करने लगती है इधर आनंद को अपनी गलती का एहसास होता है लेकिन आनंदके पास अनुपमा के प्रश्नों का कोई उत्तर नही है। वह जीवन में पीछे लौंटने से मना कर देती है। सुधा मूर्तीजी ने अनुपमा के रूप में आधुनिक नारी की चेतना का अत्यंत सजीव चित्रण किया है। आनंद जो अनुपमा का दीवना था, पति होते हुए भी ऐसे समय में उससे किनारा कर लेता है, जब अनुपमा को असकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। अनुपमा को उसके कुष्ठरोग के कारण उसकी सौतेली मॉ उसको स्वीकार नही करती है। इन असहाय परिस्थितियों में वह हिम्मत नही हारती और अकेले समाज की हर परिस्थिति का सामना करती है। आर्थिक और सामाजिक रूप से वह स्वावलंबी बनती है।

Sakri (Dhule)
PRINCIPAL
V.U.Patil Arts &
Dr.B.S.Deosale Science College
Sakri, Tal Sakri, Dist.Dhule

महात्मा गांधी के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन मे महिलाओं ने हिस्सा लिया, अपनी हिम्मत, साहस शौर्य से आंदोलन को सफल बनाया। कमला नेहरू, सरोजनी नायडु, अरूणा आसअली, विजया लक्ष्मी पंडित, सुचिता कृपलानी, इंदिरा गांधी, आदि कई नारियों ने स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। स्त्रिया की स्थिती में सुधार, जागृती की प्रेरणा स्वाधीनता के दौरान ही मिली इन महान नारियों ने रचनात्मक कार्य भी किथे।

इस प्रकार आधुनिक काल की अनेक महिला साहित्यकारों नें विभिन्न उपन्यासों द्वारा आधुनिक नारी की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और मानसिक भावनाओं को सफलता पूर्वक अभिव्यक्त किया है।.

संदर्भ सूची :

१. कठगुलाब – मृदूलागर्क
२. चाक – मैत्रियी पुष्पा
३. बेतवा बहती रही – मैत्रियी पुष्पा
४. महाश्वेता – सूधा मूर्ती
५. हंस पत्रिका